


---

# Pashupatistotram

——  
पशुपतिस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : pashupatistotram

File name : pashupatistotram.itx

Category : shiva

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

Description/comments : From Shivastotraratnakara, Gita press

Latest update : October 1, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Pashupatistotram

---

### पशुपतिस्तोत्रम्

---



स पातु वो यस्य जटाकलापे  
स्थितः शशाङ्कः स्फुटछारगौरः ।  
नीलोत्पलानामिव नालपुञ्जे  
निद्रायमाणः शरदीव हंसः ॥ १ ॥

जिनके जटाजूटमें स्थित गौरवर्णका यन्द्रमा शरद्-ऋतुमें  
नील कमलके नालोंमें निद्रायमाण हंस-सा दीप् रछा है, जैसे  
यन्द्रभूषण भगवान पशुपति आप सबकी रक्षा करें ॥ १ ॥

जगत्सिसृक्षप्रलयक्रियाविधौ  
प्रयलमुन्मेषनिमेषविलम्भम् ।  
वदन्ति यस्येक्ष्णालोलपक्ष्मणां  
पराय तस्मै परमेष्ठिने नमः ॥ २ ॥

जिन भगवान पशुपतिके बंचल नेत्रोंको पलकोंका उन्मेष  
(पोलना) , निमेष (बंद करना) एवं विलम्भ (धूमना) संसारकी  
सृष्टि, पालन तथा संसारकी क्रियाओंका प्रयत्न कछा जाता है,  
उन परात्पर परमेष्ठी भगवान पशुपतिको नमस्कार है ॥ २ ॥

व्योम्नीव नीरदभरः सरसीव वीथि-  
व्यूहः सल्लस्रमलसीव सुधांशुधाम ।  
यस्मिन्निर्दं जगद्दुदृति य लीयते य  
तच्छास्त्रमवं भवतु वैभवमृद्भये वः ॥ ३ ॥

जिनके भीतर यछ जगत् उसी प्रकार प्रकट और विलीन  
होता रछता है, जिस प्रकार आकाशमें मेघपुंज, तालाबमें तरंगसमूह  
और अनन्त दीप्तिवाले सूर्यमण्डलमें यन्द्रमाकी किरणें, जैसे  
भगवान पशुपति शंकर आप सबको सुख-समृद्धि प्रदान करें ॥ ३ ॥

यः कन्दुकैरिव पुरन्दरपद्मसदा-

पधापतिप्रभृतिभिः प्रभुरप्रमेयः ।

भेलत्यलङ्घ्यमहिमा स हिमाद्रिकन्या-

कान्तः कृतान्तदलनो गलयत्वघं वः ॥ ४ ॥

अप्रमेय अवं अनतिक्रमणीय महिमावाले तथा कृतान्त (यमराज) -

का दलन करनेवाले, छन्द, ब्रह्मा और विष्णु आदिके साथ

कीडा-कन्दुक बनकर संसारमें कीडा करनेवाले पार्वतीपति

भगवान पशुपति आपलोगोंके पापको नष्ट करें ॥ ४ ॥

दृश्यात् स शीतकिरणामरणः शिवं वो

यस्योत्तमाङ्गभुवि विस्फुरदुर्मिपक्षा ।

हंसीव निर्मलशशाङ्कुकलामृणाल-

कन्दार्थनी सुरसरिन्नभतः पपात ॥ ५ ॥

जिन भगवान शंकरके सिरपर अपनी लहरोंके साथ लहराती

हुई गंगा आकाशसे इस प्रकार अवतरित हो रही है, जैसे

चन्द्रमाको निर्मल मृणालकन्द समझकर उसे पानेकी इच्छा करती

हुई और अपने पंजोंको छिलाती-डुलाती हंसी आकाशसे

सरोवरमें उतर रही हो । जैसे शीतकिरण चन्द्रमाको आभूषणरूपमें

धारण करनेवाले भगवान पशुपति आप सबका कल्याण करें ॥ ५ ॥

॥ इति पशुपतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ इस प्रकार पशुपतिस्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ॥

वन्दे शिवं शङ्करम्

Proofread by Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com



*Pashupatistotram*

pdf was typeset on August 30, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

